



Platinum Edition

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

Platinum Edition

(अंक-75, जुलाई-दिसम्बर, 2018)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. निवेदिता मैत्रा
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 264455

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

अनुक्रमणिका

चारणी पांडुलिपिविज्ञान : स्वरूप-विमर्श बलवंतराय शांतिलाल जानी	7
गुरुकुल : महत्त्व और आवश्यकता राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी	24
सूफी कवि जायसी और उनका सौन्दर्य-बोध विजय बहादुर सिंह	33
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जीवन-दर्शन रामदेव शुक्ल	42
इतिहास-बोध की संस्कृति-सापेक्षता एवं भारतीय इतिहास-बोध कमलनयन	47
साहित्य और उसका शिक्षण : अर्थ और आयाम रवीन्द्र कुमार पाठक	60
आलोचना : प्रकृति एवं स्वरूप भवतोष इन्द्र गुरु	74
रमेशचन्द्र शाह : बहुवचनी सृजनात्मकता के शीर्षस्थ साधक छबिल कुमार मेहेर	79
भारत में औपनिवेशिक हस्तक्षेप की बौद्धिक परियोजनाएँ सर्वेश पाण्डेय	88
आलोचनात्मक लेखन के सन्दर्भ में कवि कुँवर नारायण पर विचार मिथलेश शरण चौबे	108
1857 की स्वातंत्र्य-क्रांति के महानायक तात्या टोपे बी.के. श्रीवास्तव	118
पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक स्थल नान्दूर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि नागेश दुबे	131

1857 की स्वातंत्र्य-क्रांति के महानायक तात्या टोपे

बी.के. श्रीवास्तव

न कोई राज, न कोई बहुत बड़ा ओहदा, न बहुत अधिक शिक्षित और न कोई अति प्रशिक्षित सेना नायक, वह तो एक आम इंसान था। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति, सतत परिश्रम, आत्म विश्वास, लोगों के प्रति सत्यनिष्ठा एवं उच्च चरित्र ने उसे आम इंसान से एक खास इंसान बना दिया। 1857 की क्रांति के आरंभ से अन्त तक ही नहीं अन्त के पश्चात भी लगभग 9-10 माह तक वह एक से बढ़कर एक योग्य ब्रिटिश सेनापतियों की आँख में धूल झोंकता रहा। उनके उसे पकड़ने के लिये विछाये गये चक्रव्यूह को भेदता रहा। न स्वयं ने आराम किया और न ही अंग्रेजों को आराम करने दिया। वह एक जन नेता था। आम जनता ने उसका अत्यधिक साथ दिया।

तात्या टोपे एक छलावा था। कभी वह कानपुर के नाना साहब का साथ देता था तो कभी रानी लक्ष्मीबाई का। कभी वह राव साहब का साथ देता था तो कभी बानपुर राजा मर्दन सिंह का। कभी वह ज़िगनी की नन्ही रानी की मदद करता था, तो कभी जैतपुर की रजोरानी की। कभी बाँदा के नवाब अलीबहादुर द्वितीय का तो कभी शहजादे फिरोजशाह का। कभी नरवर के मानसिंह का साथ देता था तो कभी निमाड़ के भील नेताओं का। उसकी गति अत्यधिक तेज थी। वह रोजाना 50 मील आगे चलता था, उसका पीछा करने वाली ब्रिटिश सेना मात्र 40 मील तक ही उसका पीछा कर पाती थी। माल्सन ने इसी लिये कहा था 'तात्याटोपे की द्रुत गति देख कर मैं यह दावे से कह सकता हूँ कि विश्व के किसी भी देश की सेनायें उसका मुकाबला नहीं कर सकती।'¹

18 जनवरी 1859 के टाइम्स समाचार पत्र में लिखा था 'तात्या टोपे सर्वव्यापी मालूम होता है। लगभग आधा दर्जन फौजी दस्ते उसके पीछे पड़े हुये थे, किन्तु उनके बीच से ही खिसक जाने की वह व्यवस्था कर लेता था।'² एक ओर ब्रिटिश सरकार ने कसम खाई थी कि वे तात्या टोपे को पकड़ कर ही दम लेंगे, दूसरी ओर तात्या टोपे ने उन्हें चुनोती दे रहा था कि तात्या को पकड़ना मुश्किल ही नहीं मुमकिन है। ब्रिटिश सरकार ने तात्या को पकड़ने के लिये एक से बढ़कर एक सेनापति नियुक्त किये। प्रत्येक सेनापति फील्ड का चार्ज लेते ही गर्व के साथ यह कहता था कि वह तात्या टोपे को पकड़ कर ही रहेगा।³ कुछ ही दिन में उसका यह गर्व तात्या टोपे द्वारा तोड़ दिया जाता था। शिकार के पीछे जंगे शिकारियों ने बीज तात्या पर्णतः सुरक्षित निकल भागता